माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

***अनूप सिंह एवं **डॉ0 जे0 पी0 श्रीवास्तव**

*छात्र, इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन, शेपा परिसर, निबिया, बच्छॉव, वाराणसी

** प्राचार्य, इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन, शेपा परिसर, निबिया, बच्छॉव, वाराणसी

सारांश

शिक्षकों में कार्य संतुष्टि एवं प्रभावशीलता के कोई भी शिक्षण कार्य को पूर्ण नहीं किया जा सकता है इसलिए शिक्षकों में अपने कार्य को लेकर संतुष्टि एवं अपने शिक्षण को प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।इसी को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध समस्या के रूप माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षक शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निरूपित किये गये हैं– माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना। माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना। माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

संकेत शब्द :–*माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षक शिक्षिकायें, कार्य संतुष्टि एवं शिक्षक प्रभावशीलता*

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र के उन्नति के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण व उपयोगी अभिकरण है। शिक्षा मानव जीवन का एक सुसंस्कृत एवं महत्वपूर्ण पक्ष है। इसके द्वारा संचार की आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक एवं माध्यमिक उन्नती होती है। एक सभ्य समाज का निर्माण शिक्षा के द्वारा होता है। इसी सन्दर्भ में दार्शनिक ***जान लॉक*** *ने कहा था कि* ***पौधो का विकास कृषक के द्वारा तथा मनुष्य का विकास शिक्षा के द्वारा होता है।***

शिक्षा सामाजिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मनुष्य एक सामाजिक प्राणी बनता है। शिक्षा से मनुष्य का जीवन समृद्ध और उन्नत होता है उसकी बुद्धि और प्रज्ञा सुदृढ़ होती है। शिक्षा निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास होता है। उसके ज्ञान बोध तथा कौशल में वृद्धि की जाती है तथा सामाजिकरण किया जाता है। सामाजिक एवं राष्ट्रीय उत्तरदायित्व की पूर्ति जीविकोपार्जन की तैयारी एवं व्यावसायिक कुशलता की वृद्धि में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व शिक्षा प्रदान करने के कार्य में संलग्न अध्यापकों की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति अत्यन्त निराशाजनक थी। उस समय व्याप्त इस दयनीय स्थिति में अध्यापकों को अपने कार्यो से कितनी संतुष्टि मिलती होगी इसका आंकलन करना कठिन है परन्तु परिस्थितियों ने आगे चलकर नया मोड़ लिया मानव की मनोविज्ञान तथा औद्योगिक क्षेत्र में परिवर्तन ने मानव जीवन के सभी पक्षों को उद्वेलित करना प्रारम्भ कर दिया।

इसी क्रम में कार्य संतुष्टि नामक अवधारणा का जन्म हुआ। यद्यपि इस अवधारणा पर वैज्ञानिक ढंग से प्रथम कार्य औद्योगिक क्षेत्र में हुआ। कार्य संतुष्टि वस्तुत कार्य के प्रति व्यक्ति की अभिवृद्धि एवं उसकी आवश्यकता की पूर्ति की सूचक होती है। इस अवधारणा पर किए गये अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि कार्य से संतुष्ट व्यक्ति की उत्पादकता अधिक होती है। कार्य संतुष्टि व्यक्ति की कार्य दशाओं तथा कार्य क्षेत्र व

कार्य क्षमता से प्रभावित होती है एवं कार्य संतुष्टि व्यक्ति के जीवन, समाज को देखने की समझ व तरीकों में परिवर्तन लाती है।

सर्वप्रथम होपांक (1915) ने अपने लेख तथा एक अध्ययन कार्य द्वारा कार्य संतुष्टि की अवधारणा को प्रस्तुत किया।

शिक्षक प्रभावशीलता का अर्थ शिक्षकों के प्रभावी शिक्षण से है वर्तमान समय में विद्यार्थियों का आंकलन उनकी शैक्षिक उपलब्धि से किया जा रहा है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि जितनी अधिक होगी उनके शिक्षकों का शिक्षण उतना ही प्रभावी माना जाता है। इसी प्रभावशीलता के द्वारा विद्यार्थियों में ज्ञान, अवबोध, कौशल आदि विभिन्न गुणों का विकास होता है। विद्यार्थियों के लिए शिक्षक अपने प्रभावशीलता के द्वारा ही उनके आदर्श होते है।

विशेष तौर पर कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रभावशीलता का सीधा संबन्ध शिक्षक की शिक्षण निष्पादन क्षमता से है। इस प्रकार कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में आवश्यक है। क्योंकि बिना शिक्षक के संतुष्टि के उसमें प्रभावशीलता का भी अभाव होता है और एक बिना प्रभावी शिक्षण किसी भी प्रकार से छात्र के हित में नहीं हो सकती है।

शोध की आवश्यकता–

एक कुशल अध्यापक राष्ट्र को प्रगति एवं विकास के पथ पर आगे करने में सहायक होता है, कुशल अध्यापक नवीन प्रणाली के द्वारा अपने शिक्षण को प्रभावपूर्ण बनाता है, समस्त मानव समाज की उन्नति एवं प्रगति का उत्तरदायित्व उत्तम अध्यापकों पर ही निर्भर करता है। एक शिक्षक के लिए जितना ज्ञार्नाजन आवश्यक है उससे भी अधिक आवश्यक उस ज्ञान को छात्रो तक पहुँचाना है।

आज के परिवेश में शिक्षक की शिक्षा जगत तथा राष्ट्र के विकास में बड़ा महत्व है शिक्षण की चुनौतियाँ ज्ञान की कई परम्पराओं में अन्वेषण के नई तरीकों की तरफ आगे बढ़ रही है। आज के परिवेश में शिक्षकों के सामने देश की अधिकतम उन्नति किस प्रकार से हो सके इन सब समस्याओं का हल ढूढ़ना समय ही पहली आवश्यकता हैं। किसी भी राष्ट्र का विकास उसकी शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करता है, शिक्षा स्कूलो पर, उसकी व्यवस्था पर, विद्यार्थी के विचार, शिक्षा के विचार, कार्य संतुष्टि एवं शिक्षक प्रभावशीलता से विशेष रूप से प्रभावित होती हैं। वर्तमान समय में विद्यालयों में निर्भिक एवं योग्य अध्यापकों की आवश्यकता है ना कि ऐसे अध्यापक की जिनका कोई उद्देश्य न हो और शिक्षा के प्रति अभिक्षमता और रूचि न हो। एक शिक्षक ही वह केन्द्र बिन्दु हैं जिनके चारों ओर शिक्षण व्यवस्था चक्कर लगाती है। हमारी शिक्षा व्यवस्था के पुननिर्माण की बिना शिक्षक के सक्रिय सहयोग के पूर्ण नहीं किया जा सकता है।

अतः शिक्षकों में कार्य संतुष्टि एवं प्रभावशीलता के कोई भी शिक्षण कार्य को पूर्ण नहीं किया जा सकता है इसलिए शिक्षकों में अपने कार्य को लेकर संतुष्टि एवं अपने शिक्षण को प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

इसी को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध समस्या के रूप माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षक शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन हेतु चयन किया गया है।

शोध का उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निरूपित किये गये हैं–

1. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना –

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों के सत्यापन हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निरूपण किया गया है–

- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक संबन्धनहीं होता है।

शोध की विधि–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध का प्रतिदर्श –

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा सुविधा प्रति चयन विधि का उपयोग किया गया है, जिसमें मीरजापुर जनपद के माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत् 100 शिक्षकों (50 शिक्षक–50 शिक्षिका) का चयन किया गया है।

शोध उपकरण–

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित कार्य संतुष्टि मापनी एवं डॉ0 प्रमोद कुमार तथा डी0 एन0 मुथा द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत शिक्षक प्रभावशीलता मापनी का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी प्राविधियाँ –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण तथा सह–सम्बन्ध का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ो का विश्लेषण एवं व्याख्या –

माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन–

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों का विवरण निम्नलिखित तालिका संख्या 1 द्वारा प्रदर्शित किया गया है–

तालिका संख्या : 1

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि के अध्ययन से प्राप्त परिणाम

समूह (G)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	सार्थकता स्तर	'टी' का मान	'टी' का परिगणित मान	परिकल्पित परिणाम
शिक्षकों की कार्य संतुष्टि	50	222.12	20.69	0.05	1.96	1.17	दोनों स्तरों पर सार्थक अन्तर नहीं है।
शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि	50	215.58	17.92	0.01	2.58		

उपरोक्त तालिका संख्या–1 द्वारा स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों के 50 शिक्षको का मध्यमान 220. 12 एवं प्रमाणिक विचलन 20.60 तथा 50 शिक्षिकाओं का मध्यमान 215.58 एवं प्रमाणिक विचलन 17.92 है। 't' का परिगणित मान 1.17 जो सारणी मान 0.05 एवं 0.01 दोनों स्तरों पर क्रमशः 1.96 एवं 2.58 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।'' स्वीकार की जाती है।

माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक–शिक्षिकाओं के शिक्षण प्रभावशीलता तुलनात्मक अध्ययन–

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों का विवरण निम्नलिखित तालिका संख्या 2 द्वारा प्रदर्शित किया गया है–

तालिका संख्या : 2

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता के अध्ययन से प्राप्त परिणाम

समूह (G)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	सार्थकता स्तर	'टी' का मान	'टी' का परिगणित मान	परिकल्पित परिणाम
शिक्षक प्रभावशीलता शिक्षक	50	307.14	23.06	0.05	1.96	0.14	दोनों स्तरों पर सार्थक अन्तर नहीं है।
शिक्षक प्रभावशीलता शिक्षिका	50	307.82	24.23	0.01	2.58		

उपरोक्त तालिका संख्या 2 द्वारा स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालय के 50 शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान 307.14 एवं प्रमाणिक विचलन 23.06 तथा 50 शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान 307.82 एवं प्रमाणिक विचलन 24.23 है। 't' का परिगणित मान 0.14 जो सारणी मान 0.05 एवं 0.01 दोनों स्तरों पर क्रमशः 1.96 एवं 2.58 से कम है।

अतः शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं होता है।'' स्वीकार की जाती है।

माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि का शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन–

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों का विवरण निम्नलिखित तालिका संख्या 3 द्वारा प्रदर्शित किया गया है–

तालिका संख्या : 3

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव के अध्ययन से प्राप्त परिणाम

समूह (G)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	सहसम्बन्ध का मान (r)	सार्थकता स्तर	'टी' का मान	'टी' का परिगणित मान	परिकल्पित परिणाम
शिक्षकों की कार्य संतुष्टि	100	217.85	0.73	0.05	13.8	21.85	दोनों स्तरों पर सार्थक सम्बन्ध है।
शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता	100	307.48		0.01	11.6		

उपरोक्त तालिका संख्या 3 द्वारा स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों के 100 शिक्षको की कार्य संतुष्टि का मध्यमान 217.85 तथा 100 शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का मध्यमान 307.48 तथा 'r' का मान 0.73 है। 't' का परिगणित मान 21.85 है जो कि सारणीमान 0.05 एवं 0.01 स्तरों पर क्रमशः 13.8 एवं 11.6 से अधिक है।

अतः शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक संबंध नहीं होता है।'' अस्वीकार की जाती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं की की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षक प्रभावशीलता में सार्थक संबन्ध होता है।

शोध का निष्कर्ष–

- माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत् शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।
- माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नही है।
- माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत् शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक संबन्ध हैं।

अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ –

इस अध्ययन के द्वारा माध्यमिक शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षक प्रभावशीलता के संबन्ध को बताया गया है। इसी प्रकार के अध्ययन से कार्य संतुष्टि एवं शिक्षक प्रभावशीलता के प्रति अभिवृत्ति, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के संबन्ध को स्पष्ट कर सकते है। इस अध्ययन से प्रधानाचार्यो एवं प्रबन्धकों को शिक्षको के व्यवहार को भी समझने में मदद मिल सकती है।

किसी भी राष्ट्र के लिए उसकी शिक्षा व्यवस्था महत्वपूर्ण होती है जिसमें शिक्षक उस व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु है इसलिए अध्यापकों में कार्य को लेकर संतुष्ट होना आवश्यक है।

सन्दर्भ सूची –

अस्थाना एवं अग्रवाल (2005).*मनोविज्ञान और शिक्षा के मापन एवं मूल्यांकन.* विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.

गुप्ता एस0 पी0 (2017).*शोध संदर्शिका.* शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.

गुप्ता, एस0 पी0 (2015).*उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान.* शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.

पाठक, पी0डी0,(2012).*शिक्षा मनोविज्ञान.* विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.

पाण्डेय के0 पी0 (2008).*शैक्षिक अनुसंधान.* विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी.

पाण्डेय, के0 पी0 (2016).*शिक्षा तथा मनोविज्ञान के सांख्यिकी,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी.

पाण्डेय, पी0(1975).*शिक्षा के मूल सिद्धान्त,* विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा.

Singh, J.K., & Jain, M. (2013). A study of employees' job satisfaction and its impact on their performance. *Journal of Indian Research*, *1*(4).

Jalagat, R. (2016). Job performance, job satisfaction, and motivation : A critical review of their relationship.*International Journal of Management and Economics*,*5*(6).